CHAPTER 47

SANSKRIT

Doctoral Theses

392. अजित कुमार
रघुवंश तथा जानकीहरण में अपणिनीय प्रयोग ।
निर्देशक : डॉ. पतंजलि कुमार भाटिया
Th 15791

सारांश

शोध प्रबन्ध में संस्कृत के रघुवंश (कालिदास) तथा जानकीहरण (कुमारदास) का अध्ययन किया गया है । इन दोनों महाकाव्यों में प्रयुक्त अपाणिनीय रूपों के सम्बन्ध में विभिन्न वैयाकरणों तथा आलंकारकों द्वारा पिछले 1500 वर्षों में समस्त वाद-विवाद को एकत्रित कर उनका आलोचक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । शोध प्रबंध महाकवियों की कृतियों का व्याकरणिक दृष्टि से अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है । जिसमें यह तथ्य उभरकर आता है कि ज्यों-ज्यों इनकी काव्य-प्रतिभा का विकास होता गया त्यों-त्यों वे लोक-जीवन में प्रयुक्त प्रयोगों को अधिकाधिक अपनाते गए । ऐसे करते समय इन्होनें विभिन्न व्याकरिणिक विकल्पों का प्रयोग करते हुए अपनी शब्द चयन क्षमता का अद्‌भुत परिचय दिया है ।

विषय सूची

1. पाणिनि तथा पाणिनीतर व्याकरण । 2. रघुवंश तथा जानकीहरण एवं उनकी टीका सम्पत्ति का संक्षिप्त परिचय । 3. कृदन्त विषयक अपणिनीय प्रयोग । 4. तद्धित विषयक अपाणिनीय प्रयोग । 5. तिङन्त अपाणिनीय प्रयोग । 6. समास एवं कारक विषयक अपाणिनीय प्रयोग । 7. प्रकीर्ण । 8. उपसंहार । संदर्भ-ग्रंथ-सूची।

393. आनन्द (पुष्कर)
नाटककार के रूप में क्षेमीश्वर का मूल्यांकन ।
निर्देशक : डॉ. गिरीशचन्द्र पन्त
Th 15766

सारांश

नाटककार क्षेमीश्वर की दो रचनाएँ हैं- चण्डकौशिकम् तथा नैषाधानन्दम् । शोधप्रबन्ध में नाटककार क्षेमीश्वर के दोनों ही नाटकों में निहित नाट्यशास्त्रीय तथा काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का अध्ययन किया गया है तथा अध्ययन के माध्यम से कवि की अप्रतिम को संस्कृत साहित्य प्रेमियों के समक्ष उपस्थापित करने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. संस्कृतनाट्यसाहित्य : परिचय परम्परा, नाटककार । 2. चण्डकौशिकम् के वस्तु, नेता, रस । 3. नैषाधानन्दम् के वस्तु, नेता तथा रस । 4. चण्डकौशिकम् में नाटकीय संघटनात्मक तत्त्वों का परिपालन । 5. नैषधानन्दम् में नाटकीय संघटनात्मक तत्त्वों का परिपालन । 6. आर्य क्षेमीश्वर के दोनों ही नाटकों में काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का अध्ययन । 7. आर्य क्षेमीश्वर : नाटककार के रूप में समग्र मूल्यांकन । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

394. उमाशंकर

राजस्थान के मन्दिरों की स्थापत्यकला में वास्तुशास्त्र का विनियोग ।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

Th 15764

सारांश

कला एवं स्थापत्य का विकास सांस्कृतिक विकास का अभिन्न अंग है । राजस्थान में कला एवं स्थाप्त्य के विकास की एक सुदीर्घ परम्परा रही है । इस परम्परा के विकास में राजस्थान की भौगोलिक व ऐतिहासिक स्थिति, प्रचलित धर्म व मन्दिर वास्तुकला का योगदान शोधप्रबन्ध में वर्णित है ।

विषय सूची

1. राजस्थान का ऐतिहासिक व भौगोलिक विवेचन । 2. राजस्थान में प्रचलित धर्म व कला । 3. मन्दिर वास्तुकला । 4. 100 ई. पू. से 8वीं शती ई. तक के मन्दिरों की वास्तुकला । ईसा की 9वीं से 12वीं शताब्दी तक के मन्दिरों की वास्तुकला । ईसा की 13वीं से 20वीं शताब्दी के मन्दिरों की वास्तुकला । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

395. ओझा (देवेन्द्र नाथ)

झारखण्ड के संस्कृत अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. सविता निगम

Th 15767

सारांश

अभिलेखों में वर्णित इस क्षेत्र में किस प्रकार की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, कलात्मक एवं साहित्यिक प्रवृतियाँ उत्पन्न हुई । इसकी पुष्टि इस शोध कार्य में की गई है । इस दिशा में अन्य कतिपय प्रयास अधिकांशत : साहित्यिक स्रोतों अथवा यात्रा विवरणों पर ही आधारित है । सांस्कृतिक इतिहास के लिए उनका महत्व अत्यन्त ही नगण्य है । इस शोध-प्रबन्ध में प्राच्य विद्या की इस कमी को दूर करने का विनम्र प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. झाारखण्ड : एक परियच । 2. झारखण्ड के अभिलेखों का विवेचन । 3. अभिलेखों में प्रतिबिम्बित राजनीतिक स्थिति । 4. अभिलेखों में प्रतिबिम्बित सामाजिक जीवन एवं आर्थिक स्थिति । 5. अभिलेखों में प्रतिबिम्बित धार्मिक जीवन। 6. अभिलेखों में प्रतिबिम्बित कला एवं साहित्य । उपसंहार । संदर्भ-ग्रंथ- सूची ।

396. चौहान (रूपेश कुमार)

आचार्य विश्वेश्वरकृत व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि का व्याकरणशास्त्र को अवदान ।

निर्देशक : डॉ. पतञ्जलि कुमार भाटिया

Th 15770

सारांश

व्याकरणशास्त्र के अध्ययन से शुद्ध शब्दों के व्यवहार की दक्षता प्राप्त होती है । इस विषय पर आदिकाव्य वाल्मीकिरामायण में राम-हनुमान के प्रथम मिलन में हनुमान के मुख से निस्सृत शुद्ध शब्दावली पर प्रसन्न भगवान राम लक्ष्मण से हनुमान की प्रशंसा करते हुये यह कहने को विवश हो ही गये कि हे सौमित्र ! निश्चय ही इन्होंने समूचे व्याकरण का अनेकशः अध्ययन किया है, क्योंकि बहुत सी बातें बोल जाने

पर भी इनके मुख से कोई अशुद्धि नहीं निकली । इसलिये राम ने कहा कि लक्ष्मण देखो, इनकी वाणी में कितनी शिष्टता है । अतः शुद्ध शब्द ही मनुष्य की शिष्टता का परिचय प्रस्तुत करते है । इसलिये व्याकरणशास्त्र का अध्ययन नितान्त आवश्यक है ।

विषय सूची

1. शोध-ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, ग्रन्थकार का स्थितिकाल, ग्रन्थकार का व्यक्तित्व, ग्रन्थकार का कर्तृत्व । 2. संस्कृत वाङ्मय में शब्द का स्वरूप, शब्दतत्त्व के विषय में विभिन्न दार्शनिकों के मत, शब्द ज्ञान और ज्ञेयता, शब्दों का स्वरूप और पररूप या संज्ञा-संज्ञी भाव, शब्द : एकत्व और नानात्व, गौणमुख शब्द विवेक, न्यायदर्शन में शब्द का स्वरूप, वाक्य में शब्द का स्थान, आचार्य विश्वेश्वर की दृष्टि में शब्द का स्वरूप । 3. शब्दार्थ सम्बन्ध, विभिन्न दार्शनिकों की दृष्टि में शब्दार्थ सम्बन्ध और उनका खण्डन, शब्द शक्ति एवं शब्द का वाचकत्व, आचार्य विश्वेश्वर की दृष्टि में शब्द का वाचकत्व, आचार्य विश्वेश्वर के अनुसार साधु-असाधु शब्द विचार । 4. स्फोट की परिकल्पना एवं ध्वनि-स्फोट सम्बन्ध, कौण्डभट्ट एवं नागेशभट्ट की दृष्टि में स्फोट की वाक्यार्थ बोधता, वाक्यार्थ, अन्विताभिधानवाद और अभिहितान्वयवाद की नैयायिक समीक्षा, स्फोटवाद और आचार्य विश्वेश्वरसुरि। 5. प्रमुख वैयाकरणों एवं दार्शनिकों के आलोक में आचार्य विश्वेश्वर द्वारा सूत्रानुसारी कारक-समीक्षा । 6. समास शक्ति एवं समास भेद विवेचन, काशिका-वृत्ति के अनुसार समास, कौण्डभट्ट एवं नागेशभट्ट के अनुसार समास-विवेचन, आचार्य विश्वेश्वर के अनुसार समास और समास भेद । 7. व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि का व्याकरणशास्त्र को अवदान । उपसंहार एवं सहायक-ग्रन्थ-सूची ।

397. दुबे (शिवानी)
वराहमिहिर कृत बृहज्जातक का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र
Th 15794

सारांश

शोध प्रबन्ध में बृहज्जातक के प्रमुख टीकाकारों के मतों, वराह के पूर्ववर्ती एवं

परवर्ती प्यातिर्विदों के विचारों, वैज्ञानिक तथ्यों एवं प्रामाणिक कुण्डलियों के आधार पर बृहज्जातक की विषय-वस्तु का सम्यक् विश्लेषण किया गया है ।

विषय सूची

1. वराहमिहिर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व । 2. ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत तत्त्व । 3. जन्म सम्बन्धी विचार । 4. आयु सम्बन्धी विचार । 5. जातक सम्बन्धी विविध योग। 6. नष्टजातक सम्बन्धी विचार । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

398. पाठक (राघवेन्द्र)
अल्लराजकृत रसरत्नप्रदीपिका : एक समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. गिरीश चन्द्र पन्त
Th 15769

सारांश

काव्य-आनन्द को और अधिक प्रकर्षित करने हेतु तथा काव्य की प्राप्ति को निश्चित करने हेतु काव्याचार्यों ने रसस्रोतों तथा साधनों को स्व-स्व मति के अनुसार व्याख्यायित करने का प्रयास किया है । प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन के उपजीव्य-ग्रन्थ रसरत्नप्रदीपिका के प्रणेता अल्लाराज भी रस-व्याख्या रूपी सोपान में एक पदक्रम हैं ।

विषय सूची

1. ग्रन्थकार परिचय । 2. भाव परिशीलन । 3. स्थायिभाव परिशीलीन । 4. विभाव परिशीलन । 5. अनुभावपरिशीलन । 6. सात्त्विकभाव परिशीलन । 7. व्यभिचारिभाव परिशीलन । 8. रस परिशीलन । 9. रस-भेद । 10. रसविषयक विविध चिन्तन । उपसंहार । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

399. MALIK (Laxmidhar)
Study of the Purusottama Mahatmya.
Supervisor : Dr. K.V. Joshi
Th 15772

Abstract

Studies the Purusottama Mahatmya other wise known as Purusottama Ksetra Mahatmya which is a part of the Skanda Purana.

Gives the detailed information about the origin and evolution of the Jaganatha cult which depicted in the Purusottama Mahatmya.

Contents

1. Introduction to the Purusottama Mahatmya. 2. Sources and concepts of origin and evolution of Lord Jagannatha Cult as depicted in the Purusottama Mahatmya. 3. Impact of religions, sect and preachers on Lord Jagannatha Cult as depicted in the Purusottam Mahatmaya. 4. The geographical description and pilgrimages in the Purushottama Mahatmya. 5. Principal festivals and daily rituals of Lord Jagannatha as depicted in the Purusottama Mahatmaya. 6. Socio-economical and political condition as depicted in Purusottma Mahatmya. Conclusion and bibliography.

400. मित्तल (दीपाली)

वनस्पति विज्ञान भारतीय ज्योतिषशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में ।

निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

Th 15792

सारांश

शोध प्रबन्ध के अन्तगर्त वनस्पति विज्ञान के परिप्रक्ष्य में वनस्पति से सम्बन्धित अनेक विषयों का यथा प्राचीन एवं आधुनिक वनस्पति विज्ञान की उपलब्धियाँ, विशेषताएँ, दानों में साम्य, विषमता, भारतीय ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि में वनस्पति जगत्, विभिन्न ग्रह, नक्षत्रों के आधार पर वनस्पति का विश्लेषण, आयुर्विज्ञान तथा आयुर्विज्ञान के अन्तगर्त वनस्पतियों का वर्चस्व, औषधीय पादप तथा वनस्पतियाँ जो मूल, पत्र आदि के रूप में विविध रोगोपचार में प्रयुंक्त की जाती है, के अतिरिक्त वास्तुशास्त्र के अनुसार वनस्पति जगत की व्यास्था किस प्रकार होनी चाहिए, गृहनिर्माण आदि कार्यों में कौन-कौन सी वनस्पति सर्वाधिक उपयोगी है इत्यादि विषयों को प्रदर्शित एवं अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. वनस्पति विज्ञान - क्षेत्र व सीमायें । 2. भारतीय ज्योतिषशास्त्र और वनस्पति विज्ञान । 3. वनस्पति विज्ञान एवं आयुर्वेद परम्परा । 4. वनस्पति जगत् एवं वास्तुशास्त्र । उपसंहार । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

401. रामचन्द्र

सरस्वतीकण्ठाभरण और सिद्धान्तकौमुदी के तद्धितप्रकरण का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. पतंजलि कुमार भाटिया

Th 15825

सारांश

शोधप्रबन्ध का आधारग्रन्थ सरस्वतीकण्ठाभरण अपूर्व विशेषताओं से सम्पृक्त है । पाणिनीय प्रक्रिया ग्रन्थों के सर्वोतम निदर्शन एवं पराकाष्ठा के रूप में सिद्धान्तकौमुदी सर्वत्र अभिनन्दित एवं प्रशंसित है । ये दोनों ग्रन्थ अपने-अपने चरम का प्रतिनिधित्व करते है । जहाँ सरस्वतीकण्ठाभरण में अष्टाध्यायी, महाभाष्य के अतिरिक्त अन्य पाणिनीयेतर व्याकरणों का सार समाविष्ट है, वहीं सिद्धान्तकौमुदीकार को यथंत्तरं मुनीनां प्रामण्यम् के अतिरिक्त किमपि अभीष्ट नहीं है । तद्धितप्रकरण व्याकरण वाङ्मस का विचित्र अंश है जो कि सर्वाधिक विस्तृत एवं महत्त्वपूर्ण है, तथापि अत्यल्प प्रचलित है ।

विषय सूची

1. भोजदेव एवं भट्टोजिदीक्षित का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व । 2. सरस्वतीकण्ठाभरण और सिद्धान्तकौमुदी का सामान्य परिचय । 3. सरस्वतीकण्ठाभरण और सिद्धान्तकौमुदी पर पूर्ववर्ती वैयाकरणों का प्रभाव । 4. आलोच्य ग्रन्थों के आधार पर तद्धितप्रकरण का तुलनात्मक अध्ययन । 5. सरस्वतीकण्ठाभरण और सिद्धान्तकौमुदी का उत्तरवर्ती वैयाकरणों पर प्रभाव । 6. सरस्वतीकण्ठाभरण के भ्रष्टपाठ : सत्यपाठ निर्धरण । उपसंहार एवं निष्कर्ष । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

402. रेखा

ईशावास्योपनिषद् की प्रमुख अद्वैतपरक टीकाओं का समीक्षात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. मदनमोहन अग्रवाल

Th 15793

सारांश

शोध प्रबन्ध में ईशावास्योपनिषद् की प्रमुख अद्वैत परक टीकाओं के भाष्यकारों और

अद्वैत दर्शन के सिद्धान्ताचार्यों तथा विभिन्न अद्वैत अत्त्वमीमांसा के दार्शनिक सोपानों का अध्ययन किया गया है । शोधप्रबन्ध का एक मुख्य योगदान है ईशावास्योपनिषद् के अद्वैत भाष्यकारों को अद्वैत दर्शन के सिद्धान्ताचार्यों के रूप में प्रतिष्ठित करना । शोधप्रबन्ध में ईशावास्योपनिषद् के 14 अद्वैत टीकाकारों के व्यक्तित्व, कृतित्व और उनके दार्शनिक योगदान से दार्शनिक जगत् को अवगत कराने का विनम्र प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. उपनिषद् साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि । 2. ईशावास्योपनिषद् एक परिचय और उसका अध्यात्मदर्शन । 3. ईशावास्योपनिषद् का टीका साहित्य । 4. ईशावास्योपनिषद् के अद्वैत टीकाकारें का व्यक्तित्व और कृतित्व । 5. ईशावास्योपनिषद् की मन्त्रानुसारी दार्शनिक व्याख्या । 6. ईशावास्योपनिषद् की अद्वैत टीकाओं में तत्त्वमीमांसा । उपसंहार । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

403. शर्मा (अजंना)

जीवगोस्वामी विरचित ''सर्वसम्वादिनी'' का आलोचनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. मदनमोहन अग्रवाल

Th 15826

सारांश

सर्वसम्वादिनी ग्रन्थ षट्सन्दर्भ ग्रन्थ का प्रपूर्त्तिविशेष है । इसमें जीवागोस्वामीपाद ने षट्सन्दर्भ में प्रयुक्त दार्शनिक सिद्धान्तों की आपूर्ति हेतु अनेकत्र स्थलों पर नाना शास्त्रप्रमाण एवं विशदरूप से युक्तिपूर्वक तर्क आदि के द्वारा सिद्धान्तों की समीक्षा की है । वेद-वेदान्त, न्याय - सांख्य, स्मृति-पुराणदि और समस्त पूर्वाचार्यों के अभिमत का मन्थन करते हुए प्रगाढ़ आलोचना के साथ समस्त मतो का समन्वय कर शास्त्र निगूढ़ तथ्य को हस्तामलकतवत् सभी को प्रत्यक्ष कराया है । प्रगाढ़ दार्शनिक आलोचना के कारण तथा समस्त मतों का प्रचुर विचार करने के कारण यह ग्रन्थ मूलग्रन्थ अर्थात् षट्सन्दर्भ से जटिल अवश्य है, किन्तु अधिक उपादेय है। सर्वसम्वादिनी चैतन्य-वेदान्त का अद्वितीय ग्रन्थ है । इसमें तत्त्वमीमांसा इत्यादि का युक्ति युक्त रीति से विवेचन है, जिसका आलोचनात्मक अध्ययन करने का प्रयास प्रस्तुत प्रबन्ध में किया गया है ।

विषय सूची

1. जीवगोस्वामी का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व । 2. सर्वसम्वादिनी का परिचय । 3. सर्वसम्वादिनी में तत्त्वमीमांसा । 4. सर्वसम्वादिनी में प्रमाणमीमांसा । 5. सर्वसम्वादिनी में मुक्ति मीमांसा । उपसंहार । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

404. शर्मा (नीतू)

डॉ. हरिनारायण दीक्षित कृत भीष्मचरितम् में प्रतिबिम्बित सामाजिक एवं राजनैतिक तत्व ।

निर्देशिका : डॉ. सुनीता गुप्ता

Th 15765

सारांश

भीष्मचरितम् में समाज एवं राजनीति के विविध तत्त्वों में दर्शन हो जाते है । डॉ. दीक्षित आधुनिक कवि है अतः उन्होंने आधुनिक समस्याओं की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित किया है । आतंकवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद और संप्रदायवाद, आधुनिक भारत की ज्वलंत समस्याएँ हैं । इन पर विजय पाने कि लिए शास्क को प्रेरित किया है तथा ऐसी नीतियाँ अपनाने की प्ररेणा दी है जिससे इन समस्याओं का दमन हो । इसके अतिरिक्त राष्ट्रप्रेम को सर्वोच्च मानते हुए देश के तीर्थों, पर्वों, नदियों और पर्वतों को भी पूजनीय माना है ।

विषय सूची

1. कवि का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व । 2. भीष्मचरितम् में प्रतिबिम्बित सामाजिक तत्त्व। 3. भीष्मचरितम् में प्रतिबिम्बित राजनैतिक तत्त्व । उपसंहार । संदर्भ-ग्रंथ-सूची।

405. शर्मा (प्रीति)

वैदिक मुहूर्त विज्ञान का समीक्षात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

Th 15771

सारांश

'मुहूर्त' शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ, कोश ग्रंथों के आधार पर तथा निर्वचन निरूक्त

के अनुसार दिया गया है । साथ ही इसमें मुहूर्त शब्द की अनेक अवधारणाओं का भी वर्णन किया गया है । मुहूर्त की संख्या उनके नाम एवं उनके स्वामियों का वर्णन वैदिक काल (तैत्तिरीय ब्राह्मण), वेदाङ काल (आथर्वण ज्योतिष), स्मृति एवं पुराण काल (वराहमिहिर काल) तथा मुहूर्त मार्तण्ड काल के आधार पर किया गया है । वारों के नाम, उनकी शुभशुभता, अधिदेवता, वरों की उपादेयता तथा सप्त वारों के किए जाने वाले कर्मों का विधान बतलाता गया है तथा कुलिकादि मुहूर्त, त्याज्य मुहूर्त का भी वर्णन किया गया है । साथ ही नक्षत्र, उल्का व धूमकेतु के आकाश में दर्शन उनके वर्ण, आकार-प्रकार के शुभाशुभ फल का वर्णन किया गया है । शोध में मुहूर्त का महत्व उपादेयता तथा मुहूर्त एक अंध विश्वास का निवारण किया गया है ।

विषय सूची

1. वैदिक वाङ्मय में मुहूर्त सम्बन्धी तत्त्व । 2. वैदिक मुहूर्त विज्ञान के आधारभूत अंग । 3. आर्ष महाकाव्यों में मुहूर्त संबंधी तत्त्व । 4. वैदिक मुहूर्त शास्त्र का पृथक निर्धारण । 5. मुहूर्त की उपादेयता । निष्कर्ष । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

406. सिंह (युद्धवीर)

आचार्य विश्वेश्वर का गद्यकाव्य में योगदान-मन्दारमञ्जरी के परिप्रेक्ष्य में ।

निर्देशक : डॉ. गिरीश चन्द्र पन्त

Th 15768

सारांश

शोध-प्रबन्ध में आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय का गद्यकाव्य में योगदान मन्दारमञ्जरी के परिप्रेक्ष्य में प्रतिपादित किया गया है । आचार्य की मन्दारमञ्जरी में प्रकटित बहुमुखी अद्‌भुत प्रतिभा का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है ।

विषय सूची

1. आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व । 2. गद्यकाव्य का उद्भव और विकास । 3. काव्यशास्त्रीय मानदण्डों पर मन्दारमञ्जरी । 4. मन्दारमञ्जरी में काव्यशास्त्र एवं काव्यशास्त्रेतर तत्त्व । 5. गद्यकाव्यपरम्परा में मन्दारमञ्जरी का वैशिष्ट्य । उपसंहार एवं निष्कर्ष । परिशिष्ट । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

407. सुमन

यजुर्वेदीय ब्राह्मण एवं आरण्यक ग्रन्थों में यज्ञों की प्रतीकात्मक व्याख्या : एक अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. शारदा शर्मा

Th 15773

सारांश

शोध-प्रबन्ध में वेद का अर्थ, संख्या, यजुर्वेद की प्राचीनता, विषय-वर्णन, शाखाएँ, धर्म आदि विषयों का वर्णन है । ब्राह्मण शब्द का अर्थ, संख्या, काल, निर्धारण, चारों वेदों के ब्राह्मणों की संख्या, विषय-वस्तु एवं महत्त्व इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला गया है । आरण्यक शब्द की परिभाषा, विषय-वस्तु, आरण्यक व उपनिषद् का सम्बन्ध, चतुर्वेदीय आरण्यक ग्रन्थों की विषय-परिधि इत्यादि विषय वर्णित है । प्राचीन वैदिक काल और उनके आधुनिक प्रतीक में यज्ञों की संख्या, यज्ञों के प्रतीक, प्रतीकों का महत्त्व, प्राचीन व आधुनिक प्रतीक, प्रतीकों की वैज्ञानिकता, यज्ञ एक प्रतीकात्मक क्रिया आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है । यज्ञों के प्रयोजन और उपयोगिता में यज्ञ में क्रम-पाठ एवं अवसान का महत्त्व, यज्ञों की ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सामाजिक उपयोगिता इत्यादि विषय वर्णित है ।

विषय सूची

1. यजुर्वेद का संक्षिप्त परिचय । 2. ब्राह्माण ग्रन्थों की विषय-परिधि । 3. आरण्यक ग्रन्थों की सामान्य पृष्ठभूमि । 4. यज्ञों की प्रतीकात्मक व्याख्या । 5. प्राचीन वैदिक यज्ञ और उनके आधुनिक प्रतीक । 6. यज्ञों के प्रयोजन और उपयोगिता । 7. उपसंहार । संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।

M.Phil Dissertations

408. अग्रवाल (सुषमा)

भारतीय दर्शन में योगज प्रत्यक्ष।

निर्देशक : डॉ. हर्ष कुमार

409. आशीष कुमार

शंकरविरचित 'आत्मबोध' का समीक्षात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. चञ्चल मिश्रा

410. आशुतोष कुमार
महामहोपाध्याय चित्रधर विरचित ''प्रमाणप्रमोद'' का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. मदन मोहन अग्रवाल

411. ओझा (अनिरूद्ध)
परमलघुमञ्जूषा के शक्ति-निरूपण पर तत्वप्रकाशिका टीका का विश्लेष्णात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. दीप्ति त्रिपाठी

412. गीता
'मुखभूषणम्' का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. मिथिलेश चतुर्वेदी

413. गुप्ता (कामिनी)
मुहूर्त-शास्त्र के परिप्रेक्ष्य में संक्रान्ति विचार।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

414. चौधरी (पूनम)
सत्यहरिश्चन्द्रोदयम् का काव्यशास्त्रीय अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. विजय गर्ग

415. ज्योति
अष्टाध्यायी और मुग्धबोध के कृत् प्रत्ययों का तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. शन्नो ग्रोवर

416. झा (अनिल कुमार)
शंकराचार्य विरचित पञ्चीकरणम़ का आलोचनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा

417. टी•आर• पार्वती
अर्थशास्त्र में राजनीतिक चेतना।
निर्देशिका : डॉ. शारदा शर्मा

418. दुबे (सरिता)
शाश्वतानन्दस्वामी विरचित 'ब्रह्मानन्दविलास' का अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. दिलीप कुमार झा

419. धर्मेन्द्र कुमार
पाणिनीय धातुपाठ में पठित भोजनार्थक, पानार्थक एवं शब्द कर्मार्थक धातुओं के अर्थनिर्देश का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. सत्यपाल सिंह

420. नथेली (पूनम)
स्वप्नविवेक का विश्लेषणात्मक अध्ययन
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

421. प्रवीन कुमारी
शिशुपालवधम् के प्रथम दो सर्गों में प्रयुक्त तिङन्तों का संरचनात्मक एवं अर्थमूलक विश्लेषण।
निर्देशिका : प्रो. दीप्ति त्रिपाठी

422. पाण्डेय (पीयूष)
फलितशास्त्र में अपत्य विचार।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं डां. पुनीत शर्मा

423. पाण्डेय (ब्रजेश कुमार)
काशी के प्रमुख मन्दिर का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं डॉ. रामदेव झा

424. पाठक (पंकज)
प्रश्नों के अनुसार शुभाशुभ ज्ञान के आधारभूत सिद्धान्त।
निर्देशक : डॉ. देवेन्द्र मिश्र एवं डॉ. रामदेव झा

425. बंसल (सीमा)
सांख्य-योग दर्शन में प्रमाण मीमांसा।
निर्देशिका : डॉ. शकुन्तला पुञ्जानी

426. भारद्वाज (चित्रा)
महाभाष्य के कारकाह्निक का समालोचनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. पतञ्जलि कुमार भाटिया

427. भावना
वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकांड का सामुद्रिक शास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं डॉ. रामदेव झा

428. मधुबाला
महाकवियों द्वारा प्रयुक्त दुर्घट-प्रयोगों का प्रक्रियाकौमुदी के आधार पर साधुत्व।
निर्देशक : डॉ. मिथिलेश चतुर्वेदी

429. मिश्रा (राजीव कुमार)
संहिता शास्त्र के परिप्रेक्ष्य में शनिचार।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

430. रजनी
रामयत्न ओझा कृत फलित विकास की नयी दृष्टियाँ और प्राचीन फलित शास्त्र।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं डॉ. रामदेव झा

431. रमण कुमार
झारखण्ड के प्रमुख मन्दिरों में वास्तुशास्त्र का विनियोग।
निर्देशिका : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं डॉ. रामदेव झा

432. राजकुमारी
ब्रह्मविद्योपनिषद्: एक अध्ययन
निर्देशिका : डॉ. शकुन्तला पुञ्जानी

433. ऋतु रानी
कुमारसम्भव में ज्योतिष तत्व।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

434. VAKIL AHAMAD
Administrative Officials, their Duties and Rights : Mentioned in the Gupta Inscriptions.
Supervisor : Dr. Ravindra Kumar Vasishtha

435. शर्मा (दिव्या)
दाम्पत्य सुख प्राप्ति और उसके अभाव के योग
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं डॉ. रामदेव झा

436. शर्मा (पीयूष)
डॉ. हरिदत्त शर्मा का संस्कृत काव्य को योगदान
निर्देशक : डॉ. गिरीशचन्द्र पन्त

437. शुक्ला (आराधना)
उपनिषदों में ज्योतिष तत्व (ईशावास्योपनिषद् एवं श्वेताश्वतरोपनिषद् के विशेष सन्दर्भ में)।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

438. SRIVASTAVA (Neha)
Tattva-Traya in Brahma-Sutra Govinda-Bhasya.
Supervisor : Prof. M. M. Agrawal

439. संध्या
आचार्य रामकरण शर्मा प्रणीत 'सीमा' में परिसंख्या अलंकार।
निर्देशक : डॉ. पी. के. पण्डा

440. सीमा रानी
मनुस्मृति में प्राप्त मानव मूल्यों की प्रासांगिकता।
निदेशिका : डॉ. शारदा शर्मा

441. सुचेता
पाँचवीं से सातवीं शताब्दी के उत्तर गुप्त वंश के उत्तर भारत के अभिलेखों का अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. संतोष गुप्ता